बढ़ई घर में बच्चे

कारपेन्ट्री से आज खाट, कुर्सी, हल जैसा बनाने का नाम नहीं रह गया है। जब से लोगों ने लकड़ी को सौन्दर्य की नजर से देखना शुरू किया है यह तेजी से विकसित होती कला के रूप में उभरी है। आज लकड़ी पर तरह–तरह की कारीगरी की जाती है। कलाकार अपनी कल्पना से लकड़ी पर जब सौन्दर्य बिखेरता है तो वह लकड़ी मन मोह लेती है। आज हर आम और खास व्यक्ति के पास लकड़ी पर की गई कला का नमूना अवश्य देखने को मिल जायगा। जिसका जीवन में विशेष उपयोग नहीं होगा। परन्तु उसमें सौन्दर्य की अनुभूती अवश्य होती है। जो मन को शान्ति और खुशी देती है। आज की इस भाग दौड़ की जिंदगी में इन्सान को सुख और शान्ति की जितनी आवश्यकता है उतनी पहले कभी नहीं रही। इसे पाने के लिए इन्सान को कला और सौन्दर्य की समझ होना अनिवार्य लगता है।

बच्चे कारपेन्ट्री की शुरूआती गतिविधियाँ अपने घरों में करते हैं। वहाँ पर वे अपने घरेलू औजार जैसे चाकू, दराती का उपयोग कर गुल्ली, डण्डा बनाते हैं। लकड़ी के टुकड़ों को जोड़कर गाड़ी बनाते हैं। परदेशी आंक की लकड़ी से तमंचा

बनाना बच्चों को आनन्द से भर देता है। जो बच्चा ये काम कुशलता से कर लेता है वह उन बच्चों की मदद करता है जो बनाने में सफल नहीं हो पा रहे हैं। अपने साथियों की मदद करना उसे अच्छा लगता है। दूसरी तरफ वे खिलौने हैं जिनको बाजार से खरीदकर लाया जाता है। इन खिलौनों का इस्तेमाल बच्चा अपने साथियों को चिड़ाने के लिए करता है। खराब होने पर बच्चा इन्हें सुधार भी नहीं पाता है। कई बार तो बच्चा स्वयं ही इन खिलौनों को गुस्से से फैंकता या पटकता हुआ नजर आता है। लेकिन जो खिलौना बच्चे द्वारा घंटो की मेहनत और लगन से बना हो उसे बच्चा लम्बे समय तक सहेजकर रखता है और वक्त–वक्त पर मरम्मत भी करता है।

उदय पाठशालाओं में कारपेन्ट्री शुरू करने का मकसद था कि बच्चों में सौन्दर्य बोध और कला की समझ विकसित हो सके। बच्चे श्रम का महत्व जाने। श्रम उनके स्वभाव का हिस्सा बने उसमें आनन्द ले सकें। इस विचार के साथ कारपेन्ट्री को एक कला कौशल के रूप में उदय पाठशालाओं में किया जा रहा है।

यह एक ऐसी कला है जो बच्चों को अपने गणित और पर्यावरणीय ज्ञान और समझ को व्यवहारिक बनाती है। उसे

जीवन से जोड़ती है। इससे एक तरफ बच्चे को अपने गणितिय ज्ञान को व्यवहारिक रूप से समझने का अवसर मिलता है। वही दूसरी तरफ बच्चे की समझ पुख्ता होती है।

बच्चे अपनी कल्पनाशक्ति का विकास करते हुए उसे लकड़ी पर मूर्त रूप दे पायें इसके लिए ज्ञान के साथ–साथ कौशल की भी आवश्यकता होगी। जो की लगातार प्रयास करने से अर्जित किया जाता है। किसी काम को सफलतापूर्वक पूरा करने की खुशी बच्चे का उत्साह तो बढ़ाती है साथ में सफलता के नये रास्ते भी खोलती है। जब बच्चा पहली बार अपने हाथों से कोई कलाकृति बनाता है तो बच्चे की तरफ से इस दुनिया को पहली प्रस्तुति होती है। उसे अपना जीवन सफल लगने लगता है।

बढ़ई घर में बच्चे